प्रेम और सौन्दर्य का वर्णन ही काव्य का निचोड़ है। संयोग श्रृंगार के साथ ही वियोग श्रृंगार में भी कवि का कोई सानी नहीं। विरह स्वयं में एक ताप है, जो बढ़ते चन्द्रमा के साथ और भी उद्दीप्त हो उठती है। संयोग के सर्वथा विपरीत वियोग या विरह हमें जीवन-यथार्थ की ओर ढकेलता है। प्रेम की इस उद्दाम पराकाष्ठा में प्रेमीजन अनुभव की तार्किकता को मान्यता देते हैं। व्यष्टि के विपरीत विरह में समष्टि का समावेश होता है।

विरह के संदर्भ में विद्यापति ने भी हृदय-वेदना का सूक्ष्म परीक्षण किया है। बेनीपुरी जी के अनुसार, "विद्यापति का विरह-वर्णन प्रेमिका के हृदय की तस्वीर है — उसमें वेदना है, व्याकुलता है, प्रियतम के प्रति तल्लीनता है।"

विद्यापति ने अपने पदों में दूती के माध्यम से नायक-नायिका के समक्ष एक-दूसरे के रूप-गुण का वर्णन और विरह में एक दूसरे के प्रति तीव्र उत्कंठा का भी बहुत ही मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। दूती-संदेश विषयक एक पद में कवि ने नायिका की विकलता का अनुभूतिगम्य चित्रण किया है। जहाँ दूती राधा की विकलता को, उसकी जर्जर स्थिति को कृष्ण से कह रही है। राधा की व्यथा-कथा का वर्णन कर वह कृष्ण को उसके पास जाने को कहती है। प्रस्तुत पद में वियोग की ज्वाला से राधा का तन जर्जर हो दुर्बलता छा गयी है और उसका मन सदैव भ्रमित रहता है —

माधव ! कि कहब से बिपरीते।
तनु भेल जरजर भरमर अंतर, चित्त रहल तहु भीते
निरस कमल-मुख कर अवलंबर, सखि माझे बइसए रोई।
नयनक नीर थीर नहि बाँधर, पंक करल महि सोई ।।

विरह के प्रसंग में नायक का प्रवास कर जाना और नायिका उसके इंतजार में उसकी आने की आशा में निमग्न रहना भी कवि की रचना की मौलिकता का प्रमाण देते हैं। नायिका अपने प्रवासी प्रेमी की बाट जोहती स्वयं को अभागिन की संज्ञा देती है। अपने भाग्य को कोसती हुई प्रेमी की मंगलकामना भी करती है —

माधव हमर रटल दुर देस। केओ न कहए सखि कुसल-सनेस
जुग-जुग जिबथु बसथु लाख कोस। हमर अभाग हुनक नहि दोस।।

वियोग-श्रृंगार की मार्मिक व्यंजना करते हुए कवि ने स्त्री मन की सुलभ उत्कंठा ईर्ष्या और दुविधा का भी मनोवैज्ञानिक चित्र उकेरा है। यद्यपि ईर्ष्या प्रेम की एक स्वाभाविक आसक्ति है और एक सामान्य मनुष्य इससे शायद ही उबर सकता है। ईर्ष्या, क्रोध, हठ :- इन सभी अपनत्व के रूपों में नायिका का नायक के प्रति अतिशय प्रेम ही छलकता है, क्योंकि प्रेम में पाने से अधिक खोने का डर स्वाभाविक होता है।

विद्यापति ने इन्हीं कोमल पंक्तियों के माध्यम से प्रेम के श्रृंगारिक रूप - वियोग एवं संयोग - दोनों का